राष्ट्रवाद की अवधारणा: भारतीय और यूरोपीय राष्ट्रवाद के परिप्रेक्ष्य में

***कृष्ण कांत सोलंकी**

सारांश

राष्ट्रवाद एक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अवधारणा है, जो किसी देश के लोगों के बीच एकता, सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्र के प्रति प्रेम को परिभाषित करती है। भारतीय और यूरोपीय राष्ट्रवाद का विकास विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में हुआ, जिसके कारण इन दोनों के स्वरूप और उद्देश्यों में भिन्नता दिखाई देती है। यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय मुख्य रूप से औद्योगिक क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति और राष्ट्र-राज्य निर्माण प्रक्रिया के दौरान हुआ। यह अवधारणा व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र की आधुनिक विचारधारा पर आधारित थी। यूरोपीय राष्ट्रवाद ने आर्थिक प्रगति, वैज्ञानिक सोच और राजनीतिक संप्रभुता को बढ़ावा दिया, लेकिन यह कभी-कभी उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का भी कारण बना। इसके विपरीत, भारतीय राष्ट्रवाद उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ। भारतीय राष्ट्रवाद का मूल उद्देश्य ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करना और सांस्कृतिक विविधता के साथ एक समृद्ध और समावेशी राष्ट्र का निर्माण करना था। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस और जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने भारतीय राष्ट्रवाद को अहिंसा, सत्याग्रह और सामूहिक आंदोलन के माध्यम से आकार दिया। इस अध्ययन में भारतीय और यूरोपीय राष्ट्रवाद के उद्भव, विकास और प्रभावों की तुलना करते हुए उनके मूलभूत अंतर और समानताओं का विश्लेषण किया गया है। यह विश्लेषण यह समझने में सहायक है कि कैसे राष्ट्रवाद विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में एक देश की पहचान और सामाजिक संरचना को प्रभावित करता है। यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

कुंजी शब्द: राष्ट्रवाद, अवधारणा भारत, यूरोप, उपनिवेशवाद।

*व्याख्याता, द्रोणाचार्य पी.जी. कॉलेज, भींडर, जिला उदयपुर (राज.)

परिचय:

राष्ट्रवाद एक ऐसी वैचारिक और भावनात्मक धारा है, जो किसी विशेष राष्ट्र या समाज के लोगों के बीच एकता, पहचान और स्वाभिमान का भाव उत्पन्न करती है। यह भावना एक साझा इतिहास, संस्कृति, भाषा, परंपरा, भूगोल और सामूहिक हितों के आधार पर विकसित होती है। राष्ट्रवाद का मुख्य उद्देश्य अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता, स्वायत्तता, और विकास सुनिश्चित करना होता है।

विभिन्न पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने इसकी अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं जो निम्न प्रकार हैं:-

हंस कोहन के अनुसार "राष्ट्रवाद एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा है, जिसमें एक राष्ट्र अपनी पहचान और संप्रभुता को सर्वोपरि मानता है।" अर्थात इसमें राष्ट्र को ही सर्वोपरि माना जाता है।

बेंजामिन किड के मत में "राष्ट्रवाद वह भावना है, जो एक राष्ट्र के लोगों को उनकी आपसी भिन्नताओं के बावजूद एकजुट करती है और उन्हें अपने साझा हितों को प्राप्त करने की ओर प्रेरित करती है।"

रवींद्रनाथ टैगोर ने इसे आध्यात्मिक रूप प्रदान करते हुए कहा कि "राष्ट्रवाद एक मानसिक और आध्यात्मिक धारा है, जो केवल भौतिक शक्ति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और मानवतावादी मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए जो देश को आगे ले जाने में सहायक हो।"

जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रवाद के संदर्भ में कहा है कि "राष्ट्रवाद का अर्थ केवल देश के प्रति प्रेम नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था की स्थापना भी है, जो देश के हर नागरिक को न्याय, समानता, और स्वतंत्रता का अधिकार दे।" नेहरू ने राष्ट्रवाद की संकल्पना को लोकतान्त्रिक मूल्यों से जोड़ने का प्रयास किया है।

इस प्रकार राष्ट्रवाद एक विचारधारा है जो इस अवधारणा पर आधारित है कि राष्ट्र या राज्य के प्रति व्यक्ति की निष्ठा और समर्पण किसी भी व्यक्तिगत या समूह हित से अधिक महत्वपूर्ण है। राष्ट्रवादियों के लिए राष्ट्र सबसे पहले आता है।

राष्ट्र, लोगों के समुदाय जो भाषा, संस्कृति, परंपरा, धर्म, भूगोल और इतिहास जैसी समान विशेषताओं को साझा करते हैं। हालाँकि, ये सभी विशेषताएँ नहीं हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए; जब यह निर्धारित करने का प्रयास किया जाता है कि एक राष्ट्र क्या बनाता है। वास्तव में, यह पहचानना मुश्किल हो सकता है कि लोगों के एक समूह को राष्ट्र क्या बनाता है। इस राष्ट्रवाद को प्रायः रोमांटिक विचारधारा कहा जाता है, क्योंकि यह तर्क के विपरीत मुख्यतः भावना पर आधारित है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में राष्ट्रवाद एक ऐसा विचार है, जिसने विभिन्न देशों और सभ्यताओं के विकास, संघर्ष और राजनीतिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया है। यह अवधारणा न केवल एक राष्ट्र के भीतर लोगों को एकजुट करती है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, और साम्राज्यवादी संघर्षों को भी अलग दिशा देती है। वैश्विक संदर्भ में, राष्ट्रवाद की उत्पत्ति, विकास, और इसके प्रभाव को विभिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों में समझा जा सकता है।

राष्ट्रवाद का आधुनिक स्वरूप 18वीं-19वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में औद्योगिक क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति (1789) के दौरान विकसित हुआ। फ्रांसीसी क्रांति ने "स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व" जैसे नारों के माध्यम से राष्ट्रवाद को जनसामान्य तक पहुँचाया। फ्रांस के नेपोलियन बोनापार्ट ने इसे पूरे यूरोप में फैलाने का प्रयास किया। 19वीं शताब्दी में जर्मनी और इटली के एकीकरण में राष्ट्रवाद ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसमें बिस्मार्क और माज़िनी आदि नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान था।

विभिन्न एशियाई और अफ़्रीकी देशों में फैले यूरोपीय साम्राज्यवाद के विरोध में इन देशों में औपनिवेशिक राष्ट्रवाद का विकास हुआ, जो वियतनाम, इंडोनेशिया, भारत और घाना जैसे देशों में स्वतंत्रता आंदोलनों का प्रेरक तत्व बना।

व्युत्पत्तिमूलक अर्थ के अनुसार, 'राष्ट्' शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'नटियो' (natio) और 'नाशी' (nasci) से मानी जाती है, जिसका अर्थ है, 'से पैदा होना'।[1] यही कारण है कि किसी राष्ट्र के प्रमुख संवैधानिक तत्वों में से एक 'समान और साझा स्थानिकता' जो "बंधुता" या "नृजातीयता" के रूप में दिखाई देता है। कुछ विद्वान राष्ट्र का निरूपण मातृभूमि/पितृभूमि या जन्मभूमि के रूप में करते हैं। मातृभूमि और पितृभूमि पद यह इंगित करता है कि राष्ट्र किसी माता-पिता

[1] ग्रॉस्बी, स्टीवन. (2005). नेशनलिज्म: अ वैरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन. पृ.44

के जन्मस्थान के रूप में पहचाना जाना चाहिए, जबकि "जन्मभूमि" से तात्पर्य है कि राष्ट्र वह स्थान है जहां कोई "निवास करता है"।[2]

अन्र्स्ट रेनन बताते हैं कि अक्सर जाति को राष्ट्र से भ्रमित किया जाता है और उसके अनुरूप वास्तव में अस्तित्वमान लोगों की संप्रभुता को नृजातीय विज्ञान या भाषाई समूहों से। रेनन के अनुसार, सामान्यतः साझा बंधुता, जाति, भाषा या भौगोलिक सीमाएं (दिक्) आदि एक राष्ट्र का निर्माण नहीं करते हैं, बल्कि यह साथ साथ जीने की इच्छा है जो कि इसके मूल में निहित है।[3] रेनन और जे. एस. मिल दोनों का मानना है कि जो समुदाय बाद में राष्ट्र के रूप में पहचाने जाने लगे वो वस्तुतः अतीत में संकटपूर्ण घटनाओं को जोड़कर और उनकी स्मृतियों से, और सामूहिक गर्व और अपमान, खुशी और पछतावे आदि के साथ उसमें भाग लेने के माध्यम से संगठित हुए थे। मिल के अनुसार, सहानुभूति, जो साधारणतः कुछ लोगों द्वारा दी जाती है, सरकारी/राजनीतिक ढांचा बनाने की इच्छा रखने वालों के बीच सहयोग के लिए आधार प्रदान करती है, जिसके तहत यह सहयोग प्रकट और विकसित होता है।[4] राष्ट्र और राष्ट्रवाद के नागरिक और नृजातीय सिद्धांत दोनों अतीत के साथ इस सहभागिता को राष्ट्र की अस्मिता के लिए एक निर्णायक तत्व मानतें हैं।

स्टीवन ग्रॉस्बी राष्ट्र को "वास्तविक और कल्पित अवधि की सामूहिक आत्म-चेतना के भूभागीय संबंध के रूप में परिभाषित करते हैं"।[5] "सामूहिक आत्म-चेतना" को समानता और साझा करने की क्षमता पर आधारित संबंध के रूप में भी देखा जा सकता है। यद्यपि इस समान साझापन का अर्थ केवल एक ही जाति से संबंधित होना, या एक जैसी संवेदनाएं होना, या जैविक प्रवृत्ति होना नहीं है; बल्कि यह "एक ही विकासोन्मुख परम्परा में भाग लेने वाले व्यक्तियों के परिणाम के रूप में प्रत्येक व्यक्ति के सामाजिक संबंध को संदर्भित करता है"। इसके अलावा ग्रॉस्बी के लिए, वर्तमान भू-भागीय संबंध जो वास्तविक और/या काल्पनिक अवधि में अपनी उपस्थिति पाते हैं, दो चीजों की ओर संकेत करते हैं, एक, अतीत के माध्यम से वर्तमान की समझ (चाहे वह ऐतिहासिक रूप से बिल्कुल सटीक हो या नहीं, जो मिथकों, कहानियों, लोककथाओं आदि

[2] ग्रॉस्बी, पृ.48.
[3] रेनन, अर्नेस्ट (2010) व्हॉट इज अ नेशन? इन नेशन एंड नेशनलिटी: थ्री एसेज. पृ.37; 53-54.
[4] मिल, जे. एस. (2010). ऑफ नेशनलिटी. इन नेशन एंड नेशनलिटी: थ्री एसेज, पृ.3.
[5] ग्रॉस्बी, पृ.11-12.

के माध्यम से व्यक्त किया जाता है; और दूसरा "भूभागीय रूप से निर्मित 'लोगों' के अस्तित्व में विश्वास, जो ऐसा माना जाता है कि समय के साथ अस्तित्व में था"।[6]

जे. एच. हेस का मानना है कि "....राष्ट्रीयता ऐसे व्यक्तियों का एक समूह है जो एक जैसी भाषा बोलते हैं, जो समान ऐतिहासिक परम्पराओं को संजोते हैं, और जो एक विशिष्ट सांस्कृतिक समाज का गठन करते हैं, या सोचते हैं कि वे गठित होते हैं, जिसमें अन्य कारकों के अलावा धर्म और राजनीति ने यद्यपि निरंतर रूप से आवश्यक भूमिका नहीं निभाई हो, महत्वपूर्ण भूमिकायें निभाई हैं।[7] हेस के अनुसार समान और साझा सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध रखने वाले लोगों के समूह को एक राष्ट्र के रूप में संदर्भित किया जा सकता है।

राष्ट्रवाद के मुख्य तत्व:

1. **भौगोलिक क्षेत्र:** राष्ट्रवाद उस क्षेत्र विशेष के प्रति जुड़ाव से जुड़ा होता है, जिसे लोग अपना घर मानते हैं।
2. **सांस्कृतिक एकता:** साझा परंपराएँ, भाषा, धर्म, और रीति-रिवाज राष्ट्रवाद को सुदृढ़ करते हैं।
3. **आर्थिक और राजनीतिक स्वायत्तता:** राष्ट्रवाद का उद्देश्य अपने राष्ट्र के लिए आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र शासन प्रणाली स्थापित करना है।
4. **सामाजिक एकता और स्वाभिमान:** राष्ट्रवाद व्यक्ति के भीतर अपने राष्ट्र के लिए गर्व और सम्मान की भावना विकसित करता है।
5. **राष्ट्रीय प्रतीक:** झंडा, राष्ट्रगान, और अन्य प्रतीक राष्ट्रीय भावना को प्रोत्साहित करते हैं।

माइकल फ्रीडेन के अनुसार, राष्ट्रवाद की मूल संरचना को बनाने वाले पाँच तत्व हैं:-[8]

1. 'एक विशेष समूह राष्ट्र को मानव और उनके व्यवहारों के लिए एक प्रमुख घटक और पहचान ढांचे के रूप में प्राथमिकता देना।'

---

[6] ग्रॉस्बी, पृ.08-12.

[7] कोहन, हैंस. (2005). दी आईडिया ऑफ़ नेशनलिज्म: अ स्टडी ऑफ़ इट्स ऑरिजन्स एंड बैकग्राउंड, पृ.21.

[8] फ्रीडेन एम. (1998). इज नेशनलिज्म अ डिस्टिंक्ट आइडियोलॉजी? पॉलिटिकल स्टडीज, वॉल्यूम-46, इश्यू-4, पृ.748-765.

2. 'किसी व्यक्ति के अपने राष्ट्र को एक सकारात्मक मूल्यांकन प्रदान किया जाता है जिससे उसे अपने सदस्यों के आचरण पर विशिष्ट दावा करने का अधिकार मिल जाता है।'

3. 'पहली दो मूल अवधारणाओं को राजनीतिक-संस्थागत अभिव्यक्ति देने की इच्छा।'

4. 'स्थान और समय को सामाजिक पहचान के महत्वपूर्ण निर्धारक माना जाता है।'

5. 'एक संबद्धता और सदस्यता की भावना जिसमें भावना और संवेदना महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।'

राष्ट्रवाद की विभिन्न अवधारणाएँ:

राष्ट्रवाद 'एक राजनीतिक सिद्धांत है जो मानता है कि राजनीतिक और राष्ट्रीय इकाई एकरूप होनी चाहिए'।[9] इस एकरूपता को प्राप्त करने के प्रयासों का विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन किया गया है। राष्ट्रवाद के अध्ययन में क्लासिक बहस आदिमवादियों और आधुनिकतावादियों के बीच विभाजित रही है। पूर्व में राष्ट्रीय लगाव की गहरी जड़ों, प्राचीन उत्पत्ति और भावनात्मक शक्ति पर जोर दिया गया है।[10] इसके विपरीत, आधुनिकतावादी राष्ट्रों को मुख्य रूप से पूंजीवाद, औद्योगीकरण, संचार और परिवहन नेटवर्क के विकास और आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की शक्तिशाली एकीकृत और समरूप शक्तियों द्वारा आकार दिए गए आधुनिक निर्माणों के रूप में अवधारणा बनाते हैं।[11]

ऐतिहासिक रूप से, राष्ट्रवाद की अवधारणा को "नागरिक" और "जातीय" राष्ट्रवाद के बीच विभाजित किया गया है। पूर्व फ्रांसीसी क्रांति के संदर्भ में फ्रांसीसी राजनीतिक दार्शनिक जीन जैक्स रूसो के विचारों से जुड़ा हुआ है। रूसो के नागरिक राष्ट्रवाद के अनुसार, राष्ट्र का निर्माण डेमोस - लोगों - पर होता है और इस प्रकार संप्रभुता राष्ट्र और लोगों की होती है। नागरिक राष्ट्रवाद स्वतंत्रता, सहिष्णुता और समानता के समावेशी मूल्यों पर आधारित है। इसके विपरीत जर्मन दार्शनिक जोहान गॉटफ्रीड हेरडर (1744-1803) ने राष्ट्रवाद को "वोल्क्सगेस्ट" के रूप में अवधारणाबद्ध किया, जो एक जातीय राष्ट्र की अनूठी भावना है जो उनके आदिम चरित्रों में निहित है, जहां प्रामाणिक "लोग" एक विशेष क्षेत्र, इतिहास और संस्कृति से जुड़े होते हैं। जर्मनी में उभरने वाला ऐसा जातीय राष्ट्रवाद और जो पूर्वी यूरोप और स्कैंडिनेविया दोनों में राष्ट्र-

[9] गेलनर, ई. (1983). नेशंस एंड नेशनलिज्म, पृ.14.

[10] स्मिथ, ए.डी. (2009). इथनो सिम्बोलिज्म एंड नेशनलिज्म: अ कल्चरल एप्प्रोच. पृ.18-22.

[11] गेलनर, ई. (2008). नेशंस एंड नेशनलिज्म (दूसरा संस्करण), पृ.16-17.

निर्माण प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है, जातीय पहचान, भाषा, धर्म और इसी तरह के लक्षणों द्वारा परिभाषित संबद्धता पर केंद्रित है।[12]

ऐतिहासिक रूप से, जातीय राष्ट्रवाद को यहूदियों, रोमा और एलजीबीटी लोगों के जातीय सफाए, नरसंहार और नरसंहार को उचित ठहराने के लिए संगठित किया गया है, जैसा कि नाजी जर्मनी और मुसोलिनी के इटली के मामलों में हुआ।

विभिन्न अवधारणाएँ:

राष्ट्रवाद क्या है, इसे समझने के लिए, किसी को "राष्ट्र" की अवधारणा को समझना होगा। बेनेडिक्ट एंडरसन राष्ट्र को 'एक कल्पित राजनीतिक समुदाय - जिसे सांस्कृतिक रूप से स्वाभाविक रूप से सीमित और संप्रभु दोनों के रूप में कल्पित किया जाता है' के रूप में परिभाषित करते हैं।[13] इस परिभाषा के चार प्रमुख तत्व हैं। सबसे पहले, राष्ट्र की 'कल्पना' केवल इसलिए की जाती है क्योंकि किसी विशेष राष्ट्र के सदस्य अपने अधिकांश साथी सदस्यों से कभी नहीं मिलेंगे, फिर भी प्रत्येक के मन में उनके मिलन की छवि रहती है। दूसरे, राष्ट्र की 'सीमित' के रूप में कल्पना की जाती है क्योंकि इसकी सीमित, फिर भी कभी-कभी लोचदार, सीमाएँ होती हैं, जिनके परे अन्य राष्ट्र स्थित होते हैं। तीसरे, राष्ट्र की 'संप्रभु' के रूप में कल्पना की जाती है क्योंकि राष्ट्र की अवधारणा स्वयं उस युग में पैदा हुई थी, जब ज्ञानोदय और क्रांति ईश्वरीय रूप से नियुक्त, पदानुक्रमित राजवंशीय क्षेत्र की वैधता को नष्ट कर रहे थे।

अंत में, राष्ट्र की कल्पना एक 'समुदाय' के रूप में की जाती है क्योंकि, प्रत्येक के भीतर वास्तविक असमानता और शोषण की परवाह किए बिना, राष्ट्र की कल्पना एक गहरी, क्षैतिज मैत्री के रूप में की जाती है। राजनीतिक समुदाय को अच्छा और निरंतर बलिदान के योग्य मानना अनिवार्य रूप से भूलने की प्रक्रिया को दर्शाता है। फ्रांसीसी इतिहासकार अर्नेस्ट रेनन ने प्रसिद्ध रूप से उल्लेख किया है कि नागरिक या जातीय राष्ट्रवाद के नाम पर राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने के प्रयासों में हिंसा और उसके बाद भूलने की क्रियाएँ शामिल हैं।[14]

---

[12] अहमद, ए. (2018). हर्डर बिलीवड देट अ नेचुरल गॉड सैंक्शनड स्टेट वाज विद अ सिंगल नेशनालिटी. अलबिलाद, 29 नवंबर, http://www.albiladdailyeng.com/herder-father-nationalism-part-i/.

[13] एंडरसन (1983) इमेजीनड कम्युनिटी, पृ.5-6.

[14] रेनन, ई. (1990). वॉट इज अ नेशन? इन एच.के. भाभा (सं.), नेशन एंड नरेशन, पृ.08-22.

समाजशास्त्री रोजर्स ब्रूबेकर का सुझाव है कि राष्ट्रों को स्थिर, वास्तविक समूहों के रूप में देखने के बजाय, हमें राष्ट्रवाद और राष्ट्र-पन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, राष्ट्र एक व्यावहारिक श्रेणी के रूप में और जिस तरह से यह धारणा को संरचित करने, विचार और अनुभव को सूचित करने और प्रवचन और राजनीतिक कार्रवाई को व्यवस्थित करने के लिए आ सकता है।[15] राष्ट्रों की लगातार पुनर्कल्पना की जाती है,[16] उनका पुनः आविष्कार किया जाता है,[17] और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में नियमित रूप से उनका पुनः निर्माण किया जाता है।[18] बाद वाले को 'सामान्य राष्ट्रवाद' कहा जाता है। भाषा, जातीयता, नस्ल, धर्म, संस्कृति और इतिहास का उपयोग समूह के सदस्यों को एकजुट करने के लिए किया जा सकता है, लेकिन विभेदित दूसरों के खिलाफ सीमाओं को भी चिह्नित किया जा सकता है।

राष्ट्र हमेशा “गैर-राष्ट्रवादियों” की पहचान और राष्ट्र के लिए बाहरी खतरों पर आधारित होता है। इसलिए, राष्ट्रवाद में अनिवार्य रूप से विशेष और सार्वभौमिक का मिश्रण शामिल होता है: यदि हमारे राष्ट्र की कल्पना उसकी सभी विशेषताओं में की जानी है, तो इसे अन्य राष्ट्रों के बीच एक राष्ट्र के रूप में कल्पना की जानी चाहिए। “उन” के बिना कोई “हम” नहीं हो सकता। इसलिए, जबकि राष्ट्रवाद खुला और सहिष्णु हो सकता है, ऐसे कई तरीके हैं जिनसे राष्ट्रवाद बंद और असहिष्णु हो सकता है। राष्ट्रवाद के बहिष्कारवादी रूप जो अक्सर दूरदराज़ की विचारधारा और सक्रियता के मूल में होते हैं, को अक्सर “देशभक्ति” या “कट्टरपंथी राष्ट्रवाद” कहा जाता है।[19]

राष्ट्रवाद के प्रकार

1. **उदार राष्ट्रवाद:**

    - यह स्वतंत्रता, समानता, और लोकतंत्र के सिद्धांतों पर आधारित है।
    - उदाहरण: फ्रांसीसी क्रांति।

---

[15] ब्रुबेकर, आर. (1996). नेशनलिज्म रिफ़्रेमड: नेशनहुड एंड दी नेशनल क्वेश्चन इन दी न्यू यूरोप, पृ.7.

[16] एंडरसन (1983).पृ.33.

[17] हॉब्सबॉम, ई.जे. (2012). नेशंस एंड नेशनलिज्म सींस 1780: प्रोग्राम, मिथ, रियलिटी (दूसरा संस्करण), पृ.22.

[18] बिलिग, एम. (1995) बेनल नेशनलिज्म, पृ.54-55.

[19] फ़र्डन, क्रिस्टोफर आर. और थोरलीफ़सन, कैथरीन (2020) वॉट इज नेशनलिज्म? सी-रेक्स, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ओस्लो, 31 अगस्त, https://www.sv.uio.no/c-rex/english/groups/compendium/what-is-nationalism.html

2. **जातीय राष्ट्रवाद:**

    - यह एक विशेष जातीय समूह की भाषा, परंपरा, और संस्कृति पर आधारित है।
    - उदाहरण: जर्मनी और इटली का एकीकरण।

3. **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद:**

    - यह एक साझा सांस्कृतिक पहचान को प्रोत्साहित करता है।
    - उदाहरण: भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण।

4. **धार्मिक राष्ट्रवाद:**

    - यह धर्म के आधार पर राष्ट्रीय एकता और पहचान का निर्माण करता है।
    - उदाहरण: पाकिस्तान का निर्माण।

5. **अति-राष्ट्रवाद:**

    - यह एक राष्ट्र की सर्वोच्चता पर जोर देता है और अक्सर दूसरों के प्रति आक्रामक होता है।
    - उदाहरण: नाजी जर्मनी।

राष्ट्रवाद के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू:

सकारात्मक पहलू:

1. **राष्ट्रीय एकता का निर्माण:**

    - यह लोगों को एक साझा लक्ष्य और पहचान प्रदान करता है।

2. **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता:**

    - राष्ट्रवाद ने उपनिवेशवाद के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया।

3. **सांस्कृतिक संरक्षण:**

    - यह सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं को संरक्षित करने का प्रयास करता है।

नकारात्मक पहलू:

1. **अति-राष्ट्रवाद और टकराव:**

    - अति-राष्ट्रवाद ने अंतरराष्ट्रीय संघर्षों, जैसे प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध को जन्म दिया।

2. **जातीय और धार्मिक विभाजन:**

    - यह सांप्रदायिकता और जातीय संघर्ष को बढ़ावा दे सकता है।

3. **संकीर्ण दृष्टिकोण:**

    - संकीर्ण राष्ट्रवाद कभी-कभी वैश्विक परिप्रेक्ष्य को नकार देता है।

भारतीय राष्ट्रवाद:

राष्ट्रवाद आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन का एक प्रमुख स्तंभ है। यह विचारधारा भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक परिवेश तक विविध रूपों में प्रकट हुई है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम राष्ट्रवाद के आधार पर संगठित एक व्यापक जनांदोलन था, जिसने औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय समाज को एकजुट किया। यह संघर्ष न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए था, बल्कि भारतीय संस्कृति, भाषा, और सामाजिक पहचान को संरक्षित और सशक्त करने का प्रयास भी था। राष्ट्रवाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के केंद्र में था और यह समय के साथ बदलते हुए विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस और जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने भारतीय राष्ट्रवाद को अहिंसा, सत्याग्रह और सामूहिक आंदोलन के माध्यम से आकार दिया।[20]

[20] चन्द्र, बिपन. (2019). आधुनिक भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, पृ.17-32.

यूरोपीय राष्ट्रवाद और भारतीय राष्ट्रवाद:

यूरोपीय और भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति और विकास अलग ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संदर्भों में हुआ। दोनों ने राष्ट्रीय एकता और पहचान के लिए कार्य किया, लेकिन उनके उद्देश्यों, प्रक्रियाओं, और परिणामों में स्पष्ट अंतर है।

---

1. उत्पत्ति का संदर्भ

यूरोपीय राष्ट्रवाद	भारतीय राष्ट्रवाद
यूरोपीय राष्ट्रवाद का उदय मुख्यतः **फ्रांसीसी क्रांति** (1789) और **औद्योगिक क्रांति** के प्रभाव से हुआ। यह राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता, और लोकतंत्र की मांग से प्रेरित था।	भारतीय राष्ट्रवाद मुख्यतः **औपनिवेशिक शासन** के खिलाफ विरोध के रूप में उभरा। इसका उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्त करना और राष्ट्रीय पहचान को पुनर्जीवित करना था।

---

2. प्रेरक तत्व

यूरोपीय राष्ट्रवाद	भारतीय राष्ट्रवाद
यूरोपीय राष्ट्रवाद में **सांस्कृतिक और जातीय एकरूपता** (जैसे भाषा, धर्म, और परंपरा) पर जोर दिया गया।	भारतीय राष्ट्रवाद ने **सांस्कृतिक विविधता** को स्वीकार किया और इसे एकता का आधार बनाया।
जर्मनी और इटली जैसे देशों के एकीकरण में जातीय और भाषाई समानता का प्रमुख योगदान था।	भारत में विभिन्न धर्मों, भाषाओं, और संस्कृतियों के बावजूद, स्वतंत्रता संग्राम ने राष्ट्रवाद को बहुसांस्कृतिक रूप दिया।

 ISSN-2583-2581

3. उद्देश्य

यूरोपीय राष्ट्रवाद	भारतीय राष्ट्रवाद
यूरोपीय राष्ट्रवाद का मुख्य उद्देश्य **राष्ट्रीय एकीकरण** और साम्राज्यों या राज्य संघों को संगठित करना था (जैसे, जर्मनी और इटली का एकीकरण)।	भारतीय राष्ट्रवाद का उद्देश्य **औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करना** और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण करना था।
इसमें एक राष्ट्र की सर्वोच्चता स्थापित करने की प्रवृत्ति दिखाई दी।	भारतीय राष्ट्रवाद ने स्वतंत्रता, समानता, और समाज सुधार को प्राथमिकता दी।

---

4. प्रक्रिया और साधन

यूरोपीय राष्ट्रवाद	भारतीय राष्ट्रवाद
यह अक्सर **सशस्त्र संघर्ष**, क्रांतियों, और सैन्य अभियानों पर आधारित था (उदाहरण: फ्रांसीसी क्रांति, नेपोलियन युद्ध)।	भारतीय राष्ट्रवाद मुख्यतः **अहिंसा और सत्याग्रह** के सिद्धांत पर आधारित था, जिसे महात्मा गांधी ने विकसित किया।
सैन्य और राजनीतिक शक्ति पर जोर था।	भारतीय राष्ट्रवाद ने जनता के व्यापक समर्थन और जन आंदोलनों को प्राथमिकता दी।

---

5. राष्ट्रीयता की परिभाषा

यूरोपीय राष्ट्रवाद	भारतीय राष्ट्रवाद
राष्ट्रीयता अक्सर **भाषा, जातीयता**, और **धर्म की समानता** पर आधारित थी।	राष्ट्रीयता की भावना को **विविधता में एकता** के सिद्धांत पर आधारित किया गया।
उदाहरण: जर्मन और इतालवी राष्ट्रवाद ने भाषाई और जातीय समानता पर जोर दिया।	भारतीय राष्ट्रवाद ने हिंदू, मुस्लिम, सिख, और अन्य धर्मों को समान रूप से शामिल किया।

 ISSN-2583-2581

6. समय और भूगोल का प्रभाव

यूरोपीय राष्ट्रवाद	भारतीय राष्ट्रवाद
यूरोपीय राष्ट्रवाद मुख्यतः **18वीं और 19वीं शताब्दी** में औद्योगिकीकरण और उपनिवेशवाद के युग में उभरा।	भारतीय राष्ट्रवाद मुख्यतः **19वीं और 20वीं शताब्दी** में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरोध में उभरा।
यूरोप में राष्ट्रवाद सीमाओं को परिभाषित करने और राज्य की संप्रभुता स्थापित करने पर केंद्रित था।	भारत में राष्ट्रवाद विदेशी शासन को समाप्त करने और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने पर केंद्रित था।

---

7. परिणाम और प्रभाव

यूरोपीय राष्ट्रवाद	भारतीय राष्ट्रवाद
यूरोपीय राष्ट्रवाद ने **अति-राष्ट्रवाद** को जन्म दिया, जिसने प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध जैसे संघर्षों को बढ़ावा दिया।	भारतीय राष्ट्रवाद ने एक **धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य** के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।
इसमें कई बार **सांस्कृतिक वर्चस्व** की प्रवृत्ति देखी गई।	भारतीय राष्ट्रवाद ने **सामाजिक और आर्थिक सुधारों** पर जोर दिया।

निष्कर्ष

राष्ट्रवाद एक शक्तिशाली और जटिल अवधारणा है, जो राष्ट्रीय पहचान और स्वायत्तता को बढ़ावा देती है। यह सकारात्मक रूप से स्वतंत्रता, एकता, और सांस्कृतिक संरक्षण को प्रोत्साहित करता है, लेकिन अति-राष्ट्रवाद के रूप में यह विभाजन और संघर्ष को भी जन्म दे सकता है। वर्तमान समय में, राष्ट्रवाद को संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण से अपनाने की आवश्यकता है, ताकि यह मानवता और विकास के लिए एक सकारात्मक शक्ति बन सके। यूरोपीय राष्ट्रवाद और भारतीय राष्ट्रवाद दोनों ने अपनी परिस्थितियों और जरूरतों के अनुसार विकास किया। यूरोपीय राष्ट्रवाद ने राजनीतिक और भौगोलिक सीमाओं को परिभाषित किया, जबकि भारतीय

राष्ट्रवाद ने स्वतंत्रता संग्राम, विविधता में एकता, और सामाजिक सुधारों को प्राथमिकता दी। भारतीय राष्ट्रवाद ने यह सिद्ध किया कि एक राष्ट्र की पहचान उसकी विविधता और सहिष्णुता में भी निहित हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- एंडरसन, बी. (1983). इमेजीनड कम्युनिटी . लंदन, यूके: वर्सो.
- बिलिग, एम. (1995). बेनल नेशनलिज्म. लंदन, यूके: सेज.
- ब्रुबेकर, आर. (1996). नेशनलिज्म रिफ़्रेमड: नेशनहुड एंड दी नेशनल क्वेश्चन इन दी न्यू यूरोप कैम्ब्रिज, यू.के.: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- फ्रीडेन एम. (1998). इज नेशनलिज्म अ डिस्टिंक्ट आइडियोलॉजी? पॉलिटिकल स्टडीज, वॉल्यूम-46, इश्यू-4, पृ.748-765.
- ग्रॉस्बी, स्टीवन. (2005). नेशनलिज्म: अ वैरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन. ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- गेलनर, ई. (2008). नेशंस एंड नेशनलिज्म (दूसरा संस्करण). न्यूयॉर्क, यूएसए: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस;
- कुमार, सुनलिनी. (2008). नेशनलिज्म इन पॉलिटिकल थ्योरी, राजीव भार्गव एंड अशोक आचार्य (संपा). दिल्ली: पियरसन.
- गांधी, एम. के. (2009) हिंद स्वराज दिल्ली: राजपाल एंड संस.
- स्मिथ, ए.डी. (2009). इथनो सिम्बोलिज्म एंड नेशनलिज्म: अ कल्चरल एप्प्रोच. लंदन: रूटलेज.
- रेनन, अर्नेस्ट (2010) व्हॉट इज अ नेशन? इन नेशन एंड नेशनलिटी: थ्री एसेज दिल्ली: क्रिटिकल क्वेस्ट.
- मिल, जे. एस. (2010). ऑफ नेशनलिटी इन नेशन एंड नेशनलिटी: थ्री एसेज. दिल्ली: क्रिटिकल क्वेस्ट.

- सिंह, अमरेश कुमार. (2018). राष्ट्रवाद- भारत के सन्दर्भ में. नेशनल जनरल ऑफ मल्टीडिसीप्लनरी रिसर्च, 01(03).
- अहमद, ए. (2018, 29 नवंबर)। हर्डर बिलीवड देट अ नेचुरल गॉड सैंक्शनड स्टेट वाज विद अ सिंगल नेशनालिटी, अलबिलाद http://www.albiladdailyeng.com/herder-father-nationalism-part-i/.
- चन्द्र, बिपन. (2019). आधुनिक भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद. दिल्ली: मेधा पब्लिशिंग हाउस.